



लैंगिक संवेदनशीलता

(Gender Sensitization)

डॉ. अनिल कुमार,

असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,

श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज,

सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश

Abstract

जेंडर संवेदनशीलता किसी भी समाज या देश के लिए बहुत जरूरी है। यह हमें बताता है कि जेंडर के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। सभी जेंडर के साथ समान व्यवहार करना चाहिए, उन्हें आगे बढ़ने के लिए समान अवसर भी देना चाहिए।

जेंडर संवेदनशीलता केवल पुरुषों और महिलाओं के लिए ही नहीं अपितु LGBTQ के लिए भी होना चाहिए। एक ऐसा समाज जहां जेंडर के प्रति लोग असंवेदनशील न रहे। जेंडर संवेदनशीलता भेदभाव को दूर करता है, लोगों को जेंडर के प्रति जागरूक करता है।

Key words- जेंडर, सेंसिटाइजेशन, जेंडर संवेदनशीलता, LGBTQ, असंवेदनशील, न्यायपूर्ण, समतापूर्ण, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, उज्वला योजना, जेंडर बजटिंग।

जेंडर संवेदनशीलता-

जेंडर संवेदनशीलता एक महत्वपूर्ण सामाजिक अवधारणा है जो हमें यह बताता है कि समाज में लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। सभी के साथ समान व्यवहार और सभी को समान अवसर देने चाहिए जिससे समाज में समानता और न्याय स्थापित हो सकें।

दूसरे शब्दों में, जेंडर संवेदनशीलता एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोगों को लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव, पूर्वाग्रहों और रूढ़ियों के प्रति जागरूक किया जाता है, जिससे वे सभी लिंगों के लोगों को समझें, उनका सम्मान करें और एक निष्पक्ष व समान समाज बनाने के लिए सभी के साथ समान व्यवहार करें, जिसमें हर व्यक्ति को समान अवसर और अधिकार मिलें।

जेंडर संवेदनशीलता का अर्थ-

जेंडर संवेदनशीलता का अर्थ है लोगों के जेंडर के आधार पर उनके साथ भेदभाव न करना और उन्हें समान अवसर प्रदान करना।

यह एक ऐसी दृष्टिकोण है जो लोगों को उनके जेंडर के आधार पर नहीं, बल्कि उनकी योग्यता और क्षमता के आधार पर आंकलन करती है।

जेंडर संवेदनशीलता को सूक्ष्म स्तर पर देखा जाय तो इसका अर्थ है कि पुरुष और महिला में भेदभाव नहीं करना चाहिए, महिलाओं को भी उतना ही अधिकार मिलनी चाहिए जितना की पुरुषों को मिला है। दोनों को आगे बढ़ने के लिए समान अवसर देना चाहिए।

व्यापक स्तर पर देखा जाय तो जेंडर संवेदनशीलता का अर्थ है कि हमें समाज में केवल पुरुषों और महिलाओं के बीच ही नहीं बल्कि LGBTQ को भी लेकर लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं करनी चाहिए।

जैसे कि पुरुष बाहर कार्य करेगा और महिला घर में खाना बनाएगी, यह गलत है क्योंकि यहाँ पर लिंग के आधार पर भेदभाव किया जा रहा है।

समाज में लिंग के आधार पर केवल महिलाओं के साथ ही नहीं अपितु लेस्बियन, गे और ट्रांसजेंडर के साथ भी भेदभाव और असमान व्यवहार किया जाता है।

जेंडर संवेदनशीलता का महत्व-

समाज में जेंडर संवेदनशीलता का महत्व निम्नलिखित है-

समानता-

जेंडर संवेदनशीलता समाज में यह सुनिश्चित करता है कि हर व्यक्ति को चाहे उनका लिंग कुछ भी हो, समान अवसर मिले, उनके साथ समान व्यवहार हो।

भेदभाव की रोकथाम-

जेंडर संवेदनशीलता समाज में लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव को रोकने में मदद करती है और लोगों को उनके जेंडर के आधार पर न्याय दिलाती है।

सामाजिक विकास-

जेंडर संवेदनशीलता सामाजिक विकास को बढ़ावा देती है और समाज को अधिक न्यायपूर्ण और समतामूलक बनाती है।

जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के तरीके-

जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा देना किसी भी समाज या देश के लिए बहुत जरूरी है।

जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए जा सकते हैं। जो इस प्रकार है-

शिक्षा- लोगों को जेंडर संवेदनशीलता के बारे में शिक्षित करना।

जागरूकता- जेंडर संवेदनशीलता के बारे में जागरूकता फैलाना।

नीतियों का निर्माण- जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा देने वाली नीतियों का निर्माण करना।

जेंडर संवेदनशीलता के प्रभाव-

जेंडर संवेदनशीलता से समाज में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में वृद्धि होती है।

यह समाज में महिलाओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा में सुधार करती है।

जेंडर संवेदनशीलता से ही लोगों की LGBTQ के प्रति सोच बदला है, उनके साथ समान व्यवहार किया जाता है।

जेंडर संवेदनशीलता से समाज में पुरुषों की मानसिकता में परिवर्तन होता है।

जेंडर संवेदनशीलता समाज में एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज बनाने में मदद करती है।

जेंडर संवेदनशीलता के लिए प्रमुख बाधक-

किसी भी समाज या देश में जेंडर संवेदनशीलता के रास्ते में बहुत रुकावटें अथवा बाधाएं हैं, जो इस प्रकार है-

पितृसत्तात्मक सोच-

समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक सोच जेंडर सेंसिटाइजेशन के लिए एक बड़ी रुकावट है। यह सोच महिलाओं और अन्य जेंडर के लोगों को उनके अधिकारों से वंचित करती है और उन्हें समाज में समान दर्जा देने से रोकती है।

अज्ञानता और शिक्षा की कमी-

जेंडर सेंसिटाइजेशन के बारे में जानकारी की कमी और शिक्षा की कमी भी एक बड़ी रुकावट है। लोग जेंडर सेंसिटाइजेशन के महत्व को नहीं समझते हैं और इसे अपने जीवन में लागू नहीं करते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएं-

समाज में व्याप्त सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएं जेंडर सेंसिटाइजेशन के लिए रुकावट पैदा करती हैं। ये मान्यताएं महिलाओं और अन्य जेंडर के लोगों को उनके अधिकारों से वंचित करती हैं और उन्हें समाज में समान दृष्टि से देखने भी नहीं देती हैं।

सरकारी और संस्थागत समर्थन की कमी-

जेंडर सेंसिटाइजेशन के लिए सरकारी और संस्थागत समर्थन की कमी भी एक बड़ी रुकावट है। सरकार और संस्थाएं जेंडर सेंसिटाइजेशन के लिए पर्याप्त नीतियां और कार्यक्रम नहीं बनाती हैं।

रुकावटों को दूर करने के उपाय-

जेंडर सेंसिटाइजेशन समाज और देश के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसके रास्ते में कई रुकावटें हैं जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है।

रुकावटों को दूर करने के कुछ प्रमुख उपाय इस प्रकार हैं-

शिक्षा और जागरूकता-

लोगों को जेंडर सेंसिटाइजेशन के बारे में शिक्षित करना और जागरूक करना आवश्यक है।

लैंगिक समानता-

लड़के और लड़कियों के बीच समानता को बढ़ावा देना चाहिए।

पितृसत्तात्मक सोच को बदलना-

समाज में पितृसत्तात्मक सोच को बदलने के लिए काम करना चाहिए।

सामाजिक समर्थन-

जेंडर सेंसिटाइजेशन के लिए सामाजिक समर्थन आवश्यक है, इसलिए लोगों को इसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

इन उपायों को अपनाकर हम जेंडर सेंसिटाइजेशन के लिए रुकावटों को दूर कर सकते हैं और एक अधिक समानतापूर्ण और न्यायपूर्ण समाज बना सकते हैं।

जेंडर सेंसिटाइजेशन की उपलब्धि-

उपलब्धि निम्नलिखित है-

1. महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता को बढ़ावा देना।
2. जेंडर आधारित हिंसा और भेदभाव को कम करना।
3. समाज में जेंडर के बारे में फैली रूढ़िवादी सोच को बदलना।
4. हर इंसान को उनके जेंडर के आधार पर नहीं, बल्कि उनकी योग्यता और क्षमता के आधार पर आंका जाना चाहिए, यह सुनिश्चित करना।

सरकारी पहल-

भारत सरकार ने महिलाओं के अधिकारों और समानता को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं। यहाँ कुछ प्रमुख सरकारी पहलें हैं-

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ- इस योजना का उद्देश्य बालिका भ्रूण हत्या को रोकना और लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देना है।

महिला शक्ति केंद्र- यह केंद्र महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करने के लिए काम करता है।

उज्वला योजना- यह योजना महिलाओं को स्वच्छ ईंधन प्रदान करती है और उन्हें धुएं से मुक्ति दिलाती है।

महिला ई-हाट- यह एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जहां महिलाएं अपने उत्पाद बेच सकती हैं और अपनी आय बढ़ा सकती हैं।

जेंडर बजटिंग- यह एक रणनीति और प्रक्रिया है जिसका दीर्घकालिक उद्देश्य जेंडर समानता के लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में देखा जाय तो जेंडर संवेदनशीलता एक महत्वपूर्ण सामाजिक अवधारणा है। इसे बढ़ावा देने से हम एक अधिक न्यायपूर्ण और समान समाज बना सकते हैं। हमें जेंडर संवेदनशीलता के बारे में शिक्षित होने और इसे अपने जीवन में लागू करने की आवश्यकता है।

जेंडर संवेदनशीलता एक महत्वपूर्ण विषय है जो हमारे समाज में व्याप्त जेंडर भेदभाव और असमानता को दूर करने के लिए आवश्यक है। हमें जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा, जागरूकता, और नीतियों के माध्यम से काम करना होगा।

जेंडर संवेदनशीलता समाज व देश के लिए बहुत जरूरी है। इससे समाज में जो लिंग के आधार पर भेदभाव किया जा रहा है, जेंडर के प्रति जो असंवेदनशीलता है, उसे दूर किया जा सकता है।

संदर्भ-

1. UNICEF. Gender Equality
2. UNESCO Gender Equality 2019.
3. www.un.org
4. www.ignou.in
5. ncert.nic.in
6. www.ncw.gov.in
7. www.india.gov.in
8. socialjustice.gov.in
9. दैनिक समाचार पत्र।